भाषा सिखाने में खेल का महत्व

सीखने में खेलों का महत्वपूर्ण स्थान है - चाहे सीखनेवाले बच्चे हों या बड़े। हम जिन खेलों की बात कर रहे हैं वे वैसे खेल नहीं है जो केवल थकान मिटाने या समय बिताने के लिए खेले जाते हैं हालाँकि ऐसे समय पर भी कुछ खेल खेलना बहुत अच्छा रहता है।

दरअसल सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान खेलों को किसी भी चरण पर खेला जा सकता है - जब आप कोई नयी चीज़ सिखा रहे हों, जब आप उसका विस्तार कर रहे हों या उसे अधिक गहराई से समझा रहे हों, या जब आप अनुमान लगाना चाहें कि बच्चों ने सिखाई हुई बात किस हद तक समझी, अथवा उस समय भी जब आप ग़लतियों का सुधार करवा रहे हों।

भाषा सिखाने में खेलों का बहुत आसानी से प्रयोग किया जा सकता है। एक सृजनात्मक अध्यापक भाषा के किसी भी पहलु को लेकर उस पर खेल बना सकता है। जाने-पहचाने खेलों को आवश्यकतानुसार ढाला जा सकता है और नए खेलों को भी बनाया जा सकता है।

खेलों पर इतना ज़ोर क्यों?

- खेल के माध्यम से बच्चे तनाव-रहित वातावरण में बहुत कुछ सीख सकते हैं।
- बोर करनेवाले रटने-रटाने के कार्य भी यदि खेलों के ज़रिए किए जाएँ तो बच्चे ख़ूब रुचि लेकर ये कार्य करते हैं।
- खेलों में सभी बच्चे जीतना चाहते हैं। जीतने के लिए वे नई बात को समझने और उसका अभ्यास करने का पूरी तरह से प्रयास करते हैं। जो बात उन्हें और किसी हालात में कठिन लगती है, खेल के माहौल में वे उसे आसानी से सीख जाते हैं।
- चूँकि खेल में हार-जीत तो कुछ हद तक संयोग की बात मानी जाती है, अतः जीतने का यह अर्थ नहीं कि कोई बहुत होशियार है और हारने का यह अर्थ नहीं होता कि कोई बहुत बुद्धू। इस तरह का मूल्यांकन परीक्षा से जुड़े तनाव से मुक्त रहता है, और साथ में सीखने की प्रक्रिया जारी रहती है।
- कक्षा में आमतौर पर अध्यापक की भूमिका अधिक और बच्चों की कम रहती है। खेल में बच्चे चौकन्ने और सक्रिय हो जाते हैं।

कुछ ऐसी बातें जो खेलो का निर्माण करते समय आपको ध्यान में रखनी चाहिए

- भाषा संबंधी उद्देश्य बिल्कुल साफ़-साफ़ निर्धारित किये जाने चाहिए।
- एक खेल के साथ बहुत अधिक उद्देश्यों को नहीं जोड़ना चाहिए।
- किसी नए खेल को कक्षा में ले जाने से पहले अपने किसी दोस्त या सह-अध्यापक के साथ खेल के देखना उचित रहता है ताकि यह पता लग जाए कि खेल सही प्रकार से खेला जा पा रहा है या नहीं।

- खेल-सामग्री बनाने में यदि बच्चों की सहायता ली जाए तो बच्चे खेल के प्रति और अधिक उत्साहित हो जाते हैं।
- बच्चे अक्सर खेल के नियमों में बदलाव के अच्छे सुझाव देते हैं जिससे खेल और अधिक प्रभावशाली हो जाता है। अध्यापक में इन सुझावों के प्रति खुलापन होना आवश्यक है।
- यदि कक्षा में बच्चों की संख्या अधिक हो तो अच्छा रहता है अगर अध्यापक पहले से ही थोड़ा सोच-विचार लें कि छोटे समूहों में बच्चों को कैसे बाँटा जाना चाहिए। कुछ खेल ऐसे होते हैं जिनमें बिना विचारे भी बच्चों को बाँटा जा सकता है। पर कभी कभी बच्चों के स्वभाव को पहचानते हुए उनको ध्यान से समूहों में बाँटना बेहतर रहता है। अन्यथा अच्छे-ख़ासे खेल भी ठीक से नहीं चल पाते क्योंकि किसी एक गुट के बच्चे आपस में झगड़ने लग जाते हैं, या जीतने की होड़ में लग जाते हैंऔर कक्षा का वातावरण बिगड़ जाता है।
- छोटे बच्चों के साथ वे खेल नहीं खेले जाने चाहिए जिनमें बच्चों को हार जाने पर खेल से निकलना पड़ता है। यह देखा गया है कि छोटे बच्चे खेल से निकलना बिल्कुल सहन नहीं कर सकते और अक्सर रोना शुरु कर देते हैं जिससे कि खेल का मज़ा किरकिरा हो जाता है। इस बात को समझ कर, ख़ास-तौर से छोटे बच्चों के साथ तो ऐसे ही खेल खेलने चाहिए जिनमें बच्चे मिल-जुल कर खेल के उद्देश्य को साकार कर सकें।

कुछ जाने-पहचाने खेल जिन्हें भाषा सिखाने के उद्देश्यों के साथ जोड़ा जा सकता है

क: द्वितीय भाषा के नए शब्द सिखाने और उनका पुनः अभ्यास कराने के खेल

- फ़्लैश-कार्ड खेल यानि चित्र और शब्द कार्डों के जोड़े बनाना (पाठ में आए नए शब्दों को लेकर ये फ़्लैश-कार्ड तैयार किए जा सकते हैं)।
- याददाश्त का खेल जिसमें किसी भी प्रकार के शब्दों के जोड़े बनाए जा सकते हैं जैसे ताला-चाबी, सूरज-चाँद आदि, या फिर जानवर और उनके घर, विलोम शब्द, या फिर पर्यायवाची शब्द आदि
- कुछ चित्र-कार्डों को उल्टा कर बीच में रखा जाए, अगर बच्चा कार्ड उठाकर उस वस्तु का नाम बता देता है तो कार्ड उसका हो जाता है, नहीं तो उसे वह वापिस रखना पड़ता है।

ख: वाक्य संबंधी नियमों के पुनः अभ्यास के कुछ खेल

- किसी एक शब्द की जगह दूसरा शब्द लगाना -

  उदाहरण ' मैं बाज़ार जा रहा हूँ। (मैं के बजाए 'शीला' लगाओ)

  शीला बाज़ार जा रही है। (जा के बजाए 'आ' का प्रयोग करो)

  शीला बाज़ार आ रही है। (शीला के बजाए तुम का प्रयोग करो) ...

- 'बीस प्रश्न' प्रश्नवाचक वाक्यों के प्रयोग का अभ्यास करने के लिए यह एक बहुत बढ़िया खेल है। यदि बच्चे बहुत छोटे हों तो इस खेल को स्कूल में उपस्थित लोगों के बारे में सीमित कर आसान बनाया जा सकता है।

- गाँधी जी कहते हैं 'अपने हाथ हिलाओ'। सब बच्चे हाथ हिलाएँ।
    - गाँधी जी कहते हैं 'अपनी गर्दन मटकाओ'। सब बच्चे गर्दन मटकाएँ।
    - 'अपने पाँव हिलाओ' । कोई कुछ न करे क्योंकि 'गाँधी जी कहते हैं' नहीं कहा गया है। जो करता है, वह खेल से बाहर हो जाता है।
    - बारी-बारी से सब बच्चों को 'गाँधी जी' बनने का मौका मिलना चाहिए।

ग: भाषा के अलग-अलग पहलुओं को परखने के लिए 'पूरमपट' खेल'

- अक्षर पूरमपट - अक्षर तथा मात्रा पहचान को परखने के लिए
- चित्र पूरमपट ' शब्द तथा शब्दार्थ को परखने के लिए
- घड़ी पूरमपट - घड़ी में देखकर समय बताने के लिए

घ: बच्चों को शब्दों के रूपाकार से खेल-खेल में परिचित कराने वाले खेल

- बच्चों से कहिए कि वे अपनी 'क्रॉसवर्ड पज़ल' बनाएँ (यानि पज़ल के उत्तर, प्रश्न नहीं)। फिर आप उनके लिए प्रश्न बनाकर एक बच्चे की पज़ल दूसरे को हल करने के लिए दीजिए।

एक आखिरी सुझाव ' एक खेल जो आप अपने बच्चों के साथ कई बार खेल सकते हैं वो यह है कि उन्हें बिना बताए आप बोर्ड पर जान-बूझकर कुछ गलतियाँ करें। बच्चों को अध्यापक द्वारा की गई गलतियाँ पकड़ने में बहुत मज़ा आता है, और इससे आप यह भी जाँच सकते हैं कि आपकी कक्षा में बच्चे कितने सतर्क हैं।